VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 22 OCT 2016 No. 3
RECEIVED

PHILOSOPHY (TEST CODE : 786)

Name of Candidate	ANITA YADAV		
Medium Hindi/Eng.	HINDI	Registration Number	16663
Center	MN, DELHI	Date	22/10/16

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1 (a)	12.5	
(b)	12.5	
(c)	12.5	
(d)	12.5	
2 (a)	12.5	
(b)	12.5	
(c)	12.5	
(d)	12.5	
3 (a)	15	
(b)	20	
(c)	15	
4 (a)	15	
(b)	20	
(c)	15	
5 (a)	15	
(b)	20	
(c)	15	

Total Marks Obtained:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are FIVE questions printed in HINDI and ENGLISH.
   इसमें पाँच प्रश्न हैं तथा हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में छपे हैं।
3. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

75, 3rd Floor, Old Rajinder Nagar Market, Near Axis Bank, New Delhi – 110060

103, 1st Floor, B/1-2, Ansal Building, Behind UCO Bank, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi – 110009

EVALUATION INDICATORS

1. Alignment Competence
2. Context Competence
3. Content Competence
4. Language Competence
5. Introduction Competence
6. Structure - Presentation Competence
7. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. (a) God cannot have at least one of the three attributes; infinite knowledge, power and Goodness. Evaluate the argument. 12.5

"ईश्वर पर अनंत ज्ञान, शक्ति व उत्तमता इन तीनों गुणों में से कम से कम एक तो नहीं हो सकता है।" इस कथन का मूल्यांकन कीजिए।

ईश्वर की व्यक्तित्वपूर्ण अवधारणा में ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व दयालु माना गया है। परंतु इन गुणों में विरोधाभास है। ईश्वर को एक साथ ही सर्वज्ञ व दयालु, सर्वशक्तिमान नहीं माना जा सकता।

यदि ईश्वर को सर्वज्ञ माना जाएगा तो सर्वशक्तिमान व उत्तम नहीं माना जा सकता क्योंकि विश्व के परिवर्तन का ज्ञान होने से उसमें नित्यता नहीं रहेगी।

अशुभ की ~~समस्या~~ उपस्थिति होने के कारण ईश्वर को सर्वशक्तिमान व दयालु एक साथ नहीं माना जा सकता। या तो अशुभ ईश्वर की इच्छा से आया होगा या फिर ईश्वर अशुभ को हटाने में सक्षम नहीं है। यदि अशुभ ईश्वर की इच्छा से आया है तो ईश्वर को दयालु व उत्तम नहीं माना जा सकता।

और यदि ईश्वर अशुभ को हटाना तो चाहता है पर हटा नहीं पा रहा है तो उसे सर्वशक्तिमान नहीं माना जा सकता। हो सकता है कि ईश्वर को अशुभ

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का ज्ञान ही न हो। ऐसी स्थिति में उसे सर्वज्ञ नहीं माना जा सकता। इसलिए या तो ईश्वर को सर्वशक्तिमान ही माना जाए या फिर दयालु। धार्मिक व्यक्ति ईश्वर को शुभ मानते हुए ~~[illegible]~~ अशुभ की सत्ता स्वीकार करते हैं। तीनों गुणों को एकसाथ तर्कतः स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

नैतिक अशुभ व प्राकृतिक अशुभ को संकल्प स्वातंत्र्य के दुरुपयोग का परिणाम मानकर न्यायसंगत ठहराने का प्रयास भी किया जाता है।

1. (b) What is meant by immortality of soul? Give the reason in its support. 12.5

आत्मा की अमरता से क्या तात्पर्य है? इसके पक्ष में तर्क दीजिए।

आत्मा की अमरता से तात्पर्य मृत्यु के पश्चात् भी आत्मा के अस्तित्व के बने रहने से है। आत्मा एक चैतन्य द्रव्य है जो शरीर, मन, आदि से भिन्न है। मृत्यु से भय कम करने तथा स्थायित्व की आकांक्षा के कारण आत्मा की अमरता को स्वीकार किया गया है। आत्मा को मृत्यु के पश्चात व्यक्तित्वपूर्ण व अव्यक्तित्वपूर्ण माना जा सकता है।

<u>समर्थन में तर्क —</u>

<u>तत्वमीमांसीय तर्क</u> — प्लेटो के अनुसार

आत्मा निरवयव है, इस कारण अविभाज्य व अविनाशी है। इसलिए इसे नित्य माना जाता है।

आत्मा प्रत्यक्ष जगत की विरोधी होने के कारण अमर है।

ज्ञानमीमांसीय तर्क - ज्ञान एक ही जन्म में प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस कारण आत्मा को अमर मानना पड़ेगा। प्लेटो व कार्तीय कई दर्शन, बुद्धिवादी दार्शनिक इसका समर्थन करते हैं।

नीतिमीमांसीय तर्क :- नैतिकता का पालन करने के लिए आत्मा की अमरता आवश्यक है। नैतिक नियम सार्वभौमिक व वस्तुनिष्ठ होते हैं। कान्ट इस मत का समर्थन करते हैं, ताकि अगले जन्म में नैतिक नियमों का फल भोगा जा सके।

कर्म-नियम पर आधारित तर्क - एक ही जन्म में सभी कर्मों का फल भोगना संभव नहीं है। अतः आत्मा के लिए अगला जन्म आवश्यक है।

परामनोवैज्ञानिक तर्क - स्टीवेन्सन ने "20 केसेज ऑफ सजेस्टिव रिइनकारनेशन" में परामनोवैज्ञानिकता के आधार पर आत्मा की अमरता का समर्थन किया।

आत्मा अमर है वह वस्त्रों के समान शरीर परिवर्तन करती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. (c) Reason & Revealation – Notes. 12.5

तर्क बुद्धि व इलहाम – टिप्पणी।

इलहाम अर्थात दैवी प्रकाशना एक ऐसा धार्मिक अनुभव है, जिसमें ईश्वर द्वारा विभिन्न माध्यमों से स्वयं को प्रकट किया जाता है। इसमें अवतार, आकाशवाणी आदि शामिल हैं।

~~इलहाम~~ इलहाम आंशिक, आत्मनिष्ठ होता है अतः इसे किसी भी प्रकार से सिद्ध नहीं किया जा सकता। दूसरी तरफ तर्कबुद्धि प्रत्येक धार्मिक अनुभव को विश्लेषण के माध्यम से ही स्वीकार करती है, इससे धार्मिक अनुभव में वस्तुनिष्ठता आती है। तर्क के माध्यम से उन्हीं धार्मिक विश्वासों को माना जाता है जो तार्किक रूप से संभव हो।

इस दृष्टिकोण से देखने पर तर्कबुद्धि व इलहाम एक-दूसरे से विपरीत हैं, क्योंकि इलहाम के माध्यम से प्राप्त धार्मिक अनुभव को तर्क द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता।

परंतु दूसरे दृष्टिकोण से देखने

पर तर्कबुद्धि द्वारा दैवी प्रकाशना से प्राप्त अनुभव को स्थायित्व प्रदान किया जाता है यह धार्मिक अनुभव को परिष्कृत व परिमार्जित कर इसे अतार्किक व अंधविश्वासी होने से बचाती है।

तर्कबुद्धि व इल्हाम दोनों का स्रोत भिन्न है। तर्कबुद्धि साधारण अनुभव से संबंधित है। अतः तर्कबुद्धि का क्षेत्र भिन्न है

1. **(d)** Mystic experience is useless for human life because of its in describable, momentary and passive nature. Discuss. 12.5

'धार्मिक अनुभव अवर्णनीय, क्षणिक व निष्क्रिय होने के कारण मानव जीवन के लिए व्यर्थ है।' चर्चा करें।

धार्मिक अनुभव के कई प्रकार हैं जैसे रहस्यवाद, दैव प्रकाशना, श्रुति, आस्था आदि। धार्मिक अनुभव सामान्यतया अवर्णनीय क्षणिक व निष्क्रिय माने जाते हैं। क्योंकि ये आत्मनिष्ठ होते हैं।

रहस्यवाद में अवर्णनीयता होती है क्योंकि गूंगे के गुड़ के समान इसके बारे में किसी को बताया नहीं जा सकता। ये विश्वास क्षणिक भी होते हैं। इन्हें दीर्घकालिक रूप से अनुभव नहीं किया जा सकता

इससे समय व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है। इसी प्रकार दैवी प्रकाशना भी क्षणिक होती है। ईश्वर अपने आप को विभिन्न माध्यमों से प्रकाशित करता है। इन अनुभवों को तर्क से सिद्ध नहीं किया जा सकता न ही विज्ञान के कथनों के समान इनका तथ्यात्मक परीक्षण किया जा सकता है। इस कारण ये अनुपयोगी हैं। इनसे अंधविश्वास कट्टरता व अतार्किकता को बढ़ावा मिलता है।

परंतु व्यावहारिक जीवन के अनुभवों के आधार पर देखा गया है कि विभिन्न रहस्यवादियों ने समाज के लिए उपयोगी कार्य किए हैं जैसे कबीर, मीरा, अरविंदो, राधाकृष्णन, विवेकानंद आदि ने। रहस्यवादी व्यक्ति सभी प्रकार के मोह व बंधन से निश्चिंत होकर अपना सर्वस्व समाज के लिए समर्पित कर देता है। ~~इससे~~ साथ ही धार्मिक अनुभव उपासक की तीव्र उत्कंठा को संतुष्ट करते हैं। इससे धर्म में उनका विश्वास मजबूत होता है। अतः धार्मिक अनुभव धार्मिक दृष्टिकोण से उपयोगी हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. (a) Religion without morality is empty and mortality without Religion is blind." Give reason in support of your view. 12.5

'नैतिकता के बिना धर्म खोखला होता है और धर्म के बिना नैतिकता अंधी होती है।' समर्थन में अपने तर्क दो।

नैतिकता व धर्म परस्पर निर्भर होते हैं। नैतिकता के बिना धर्म खोखला होता है क्योंकि कोई भी धर्म नैतिक नियमों से विहीन नहीं हो सकता। ऐसा धर्म पालन करने योग्य नहीं होता।

नैतिकता धर्म का व्यावहारिक पक्ष है। नैतिकता धर्म को परिष्कृत, परिमार्जित करती है। धर्म को शुष्क व नीरस होने से बचाती है। इससे धर्म को तार्किक बनाया जाता है। नैतिकता धर्म के अतार्किक व अनुपयोगी मान्यताओं को त्याग कर उसे समयानुकूल बनाती है। अतः धर्म के लिए नैतिकता आवश्यक है। नैतिकता से विहीन धर्म में अंधविश्वास, कट्टरता, साम्प्रदायिकता आ सकती है।

इसी प्रकार नैतिकता के लिए भी धर्म आवश्यक है। क्योंकि धर्म नैतिकता को सैद्धान्तिक आधार प्रदान करता है। धर्म के कारण ही नैतिकता का पालन संभव है। ईश्वर जैसी धारणा नैतिकता के पालन में न्यायाधीश की भाँति मनोवैज्ञानिक

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

उत्प्रेरक का कार्य करता है। धर्म नैतिकता को सार्वलौकिक व वस्तुनिष्ठ बनाता है। धर्म के आधार पर नैतिकता का पालन आम आदमी से करवाया जा सकता है अन्यथा उसके हमेशा नैतिक रहने में संदेह होगा।

अतः कहा जा सकता है कि नैतिकता रूपी वृक्ष के लिए धर्म जल के समान है। अतः धर्म व नैतिकता एक दूसरे पर निर्भर हैं तथा एक दूसरे के पूरक हैं।

2. (b) "Ekam Sat Viprah Bahudha Vadanti". Discuss this concept. 12.5

"एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति।" इस सिद्धांत की चर्चा करें।

धार्मिक व्यक्तियों ने निरपेक्ष सत्य तक पहुँचने के अनेक मार्ग बताए हैं। इनके अनुसार निरपेक्ष सत्य एक ही है परंतु उसके पास पहुँचने के अनेक मार्ग हैं। यह मत धार्मिक बहुलवाद कहलाता है।

इसके अनुसार निरपेक्ष सत्य की व्याख्या सभी व्यक्ति भिन्न प्रकार से करते हैं। क्योंकि सभी में ज्ञान, क्रिया व भावना के स्तर पर भिन्नता पाई जाती है। कुछ व्यक्ति ज्ञान मार्ग का पालन करके ईश्वर तक पहुँचने का

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रयास करते है, जैसे वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्मज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्ति। सभी व्यक्तियों का मानसिक स्तर भी भिन्न होता है।

जिन व्यक्तियों में भावनात्मक पक्ष मजबूत होता है वे भक्ति मार्ग का अनुसरण करते हैं। जैसे विशिष्टाद्वैत वाद के अनुसार नवधा भक्ति। ~~सामी व्यक्ति~~ इसमें ईश्वर की उपासना के माध्यम से परमसत्ता तक पहुँचने का समर्थन किया गया है।

क्रियात्मक पक्ष के आधार पर कर्म मार्ग का समर्थन किया गया है। इसमें सत्कर्म व निष्काम कर्म करते हुए ईश्वर प्राप्ति पर बल दिया गया है। जैसे मीमांसा दर्शन

बहुलवाद व्यक्ति स्वातंत्र्य का समर्थक है। इससे समाज में व्यक्तिवाद कट्टरवादिता को दूर किया जा सकता है। यह धार्मिक व्यक्तिवाद के विपरीत विचारधारा है। इसके अनुसार व्यक्ति विशेषता महत्वपूर्ण है न कि धर्म विशेष का। इस कारण इसमें सभी धर्मों को महत्व प्रदान किया गया है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. (c) Can religious language be shown in symbolic form? Discuss. 12.5

क्या धार्मिक भाषा प्रतीकों के रुप में दर्शाई जा सकती है ? चर्चा करें।

धार्मिक भाषा को अर्द्ध संज्ञानात्मक माना गया है। इस मत के समर्थक पॉल टिलिच व एम्बीनासहैं। पॉल टिलिच ने प्रतीकों के माध्यम से ईश्वर के ज्ञान को संभव माना है।

पॉल टिलिच के अनुसार धार्मिक कथन न तो पूर्णतया संज्ञानात्मक है नही असंज्ञानात्मक बल्कि अर्द्धसंज्ञानात्मक है। निरुपाधिक अतीत स्वयं को प्रतीकों के माध्यम से झलकाता है। प्रतीकों का निर्माण आत्मनिष्ठता के आधार पर नहीं बल्कि सार्वभौमिकता के आधार पर होता है। प्रतीक व ईश्वर मे आंतरिक व अनिवार्य संबंध होता है। इसी कारण यह चिन्ह से पृथक होता है। क्योंकि चिन्ह बाह्य संबंध पर आधारित होता है।

विभिन्न धर्मों के प्रतीक होते हैं जैसे ॐ, क्रास, 786 आदि। ये ईश्वर के बारे में सूचना तथ्यात्मक रूप से तो प्रदान नहीं करते परंतु उसे प्रदर्शित अवश्य करते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परंतु इस सिद्धान्त की आलोचना की जाती है। प्रतीकों का निर्माण हेतु चेतना गलत करता है। प्रतीक का निर्माण करने के लिए निरुपाधिक अतीत को पहले से जानना आवश्यक है तभी प्रतीक का निर्माण किया जा सकता है।

2. (d) 'Religion' needs availability of Gods but it is not necessary for 'Dharma'. Explain. 12.5

'रिलिजन ईश्वर की आवश्यकता महसूस करता है, जबकि धर्म के लिए यह आवश्यक नहीं है।' व्याख्या कीजिए।

रिलिजन से तात्पर्य है बाँधना अर्थात

- व्यक्ति के आंतरिक पक्ष को बाह्य पक्ष से
- व्यक्ति को व्यक्ति से तथा
- सीमित (व्यक्ति) को असीमित (ईश्वर) से जोड़ना।

रिलिजन के पाश्चात्य दृष्टिकोण से देखने पर ईश्वर की अवधारणा आवश्यक है क्योंकि ईश्वर को धर्म का केन्द्रीय तत्व माना गया है तथा धर्म की अन्य मान्यताएँ ईश्वर पर ही आधारित हैं। कर्मणिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बंधन, मोक्ष, पुनर्जन्म आदि की व्याख्या ईश्वर के आधार पर ही की गई है। परंतु वर्तमान में कई ईश्वर विहीन धर्म भी हैं जैसे जैन, बौद्ध आदि। इनमें ईश्वर को नहीं माना गया है। वस्तुतः रिलीजन के प्रधान दो दृष्टिकोणों को देखा जाए तो ईश्वर की आवश्यकता धर्म में नहीं होती धर्म के कुछ मूल आधार हैं जैसे एक आध्यात्मिक लक्ष्य, पूजा पद्धति, धर्म ग्रंथ, उपासना स्थल, लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग। यदि कोई धर्म व्यक्ति की क्रियात्मक, ज्ञानात्मक, भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति कर दे तो उसके लिए ~~धर्म~~ ईश्वर आवश्यक नहीं है।

भारतीय दृष्टिकोण से धर्म का तात्पर्य स्वकर्तव्य पालन से है। इस दृष्टि से भी ईश्वर का अस्तित्व आवश्यक नहीं है। कर्तव्य का पालन व्यक्ति प्रबुद्ध स्वहित व आत्मनिष्ठा के आधार पर भी कर सकता है।

अतः रिलीजन के तीसरे आधार पर ही ईश्वर आवश्यक है। ईश्वर रिलीजन का एक प्रमुख तत्व है परंतु एकमात्र तत्व नहीं है। धर्म में भी ईश्वर को आवश्यक नहीं माना गया है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. (a) Lali mere lal ki, jit dekhun tit Laal. Lali dekhan main gayi, main bhi ho gayi laal. Explain the mysticism according to Indian contest. 15

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित् लाल।

लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।

रहस्यवाद को भारतीय परंपरा के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

रहस्यवाद एक धार्मिक अनुभव है। यह ऐसा धार्मिक अनुभव है जिसे अनुभवकर्ता द्वारा किसी अन्य को नहीं बताया जा सकता है बल्कि वह स्वयं ही इसे महसूस कर सकता है।

यह अवर्णनीयता, निष्क्रियता, क्षणिकता व ज्ञानात्मकता की अवस्था है। इसमें भारतीय परम्परा के रहस्यवाद का महत्व अनूठा है। भारतीय रहस्यवादियों में कबीर महादेवी वर्मा, अरविन्दो, राधाकृष्णन व विवेकानन्द प्रमुख हैं।

कबीर के अनुसार निर्गुण ईश्वर के बारे में कुछ भी वर्णन नहीं किया जा सकता बल्कि केवल महसूस किया जा सकता है जैसे ' कहता है सो ~~[illegible]~~ नाहि जानत है सो, कहत नाहि।

रहस्यवाद का वर्णन साधारण भाषा में संभव नहीं है। इसी कारण महादेवी वर्मा कहती हैं कि 'नश्वर स्वर से कैसे गाऊँ आज मैं अनश्वर गीत' अर्थात

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनिवार्य व नित्य सत्ता का वर्णन साधारण भाषा के द्वारा संभव नहीं है।

इसी प्रकार भरविद्यों ने भी रहस्यवाद को महसूस किया। भारत में रहस्यवादी की पुरानी परम्परा है इसी कारण कहा गया है कि रहस्यवादी स्वयं भी ईश्वर रूप ही हो जाता है, उसे सर्वत्र ईश्वर ही नजर आता है। इसी कारण कहा गया है "लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल। लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।"

रहस्यवाद का वर्णन न करने के कारण ही शंकर ने इसे नेति-नेति कहा (अर्थात निर्गुण, निराकार ईश्वर के बारे में कुछ भी कहना संभव नहीं है बल्कि यह तो अपरोक्ष अनुभूति गम्य है। क्योंकि सभी मेंब्रह्म विद्यमान है अतः उसे रहस्यवाद के माध्यम से महसूस किया जा सकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. (b) Examine the ontological and cosmological arguments in favour of the existence of god. 20

ईश्वर के अस्तित्व के पक्ष में दिए जाने वाले 'ज्ञानमीमांसीय' व 'सृष्टि मीमांसीय' तर्कों का परीक्षण कीजिए।

धार्मिक व्यक्ति द्वारा ईश्वर की अस्तित्व सिद्धी में ज्ञानमीमांसीय तर्क दिया जाता है इसमें ईश्वर के विचार मात्र से ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धी का प्रयास किया जाता है। एनसलेम व डेकार्ट ने इस मत का समर्थन किया है। यह प्रागनुभविक तर्क है। इसके अनुसार हमारे मन में पूर्ण ईश्वर का प्रत्यय है, इससे ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है।

आलोचना —

- कान्ट के अनुसार विचार मात्र से अस्तित्व की सिद्धी नहीं की जा सकती। जेब में सौ डॉलर के विचार से सौ डॉलर का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता।
- यहाँ अस्तित्व को एक गुण माना गया है जबकि गुण स्वयं अस्तित्व पर निर्भर है। इससे चक्रक दोष की उत्पत्ति होती है।
- इससे अनवस्था दोष की भी उत्पत्ति होती है। क्योंकि गुण के आधार पर अन्य अस्तित्व की कल्पना करनी पड़ेगी।
- सार्त्र के अनुसार अस्तित्व सार से पूर्व होता है जबकि यहां सार को अस्तित्व से पूर्व माना गया है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

• सारत्व को तभी जाना जा सकता है जब अस्तित्व का पूर्व में ज्ञान हो अतः विचारसे अस्तित्व सिद्ध नहीं होता।

• डेकार्ट ने एक तरफ विचार का कारण ईश्वर को माना है तो दूसरी तरफ विचार के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया है।

इस प्रकार ~~सत~~ सत्ता मूलक तर्क के आधार पर ईश्वर का अस्तित्व संभव नहीं है परंतु यह अन्य तर्कों के लिए आधार प्रस्तुत करता है।

स्कॉलेस्टिक/ग्रीमांसीय तर्क — इस तर्क का समर्थन एक्वीनास व अन्य दार्शनिकों ने किया है। इसके अनुसार गतिमूलक, आकस्मिकता मूलक, कारणता मूलक व प्रयोजन मूलक तर्कों के आधार पर विश्व के अनिवार्य आधार के रूप में ईश्वर को माना गया है। परंतु इस तर्क की कई आलोचनाएँ हैं: —

• ईश्वर अलौकिक सत्ता है। ईश्वर जैसी नित्य सत्ता के आधार पर विश्व की सत्ता को सिद्ध नहीं किया जा सकता। क्योंकि विश्व गतिशील व आकस्मिक है जबकि ईश्वर नित्य व अपरिवर्तनशील है।

• कारणतामूलक तर्क मानने पर ईश्वर का भी कारण मानना पड़ेगा।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

• अनवस्था दोष से बचने के लिए ईश्वर की कल्पना की गई है। यह अंतिम सत्ता ईश्वर के बजाय प्रकृति भी मानी जा सकती है, सांख्य के समान

• ईश्वर को चेतन सत्ता माना है। चेतना अपूर्णता की ओर संकेत करती है क्योंकि चेतना विषयापेक्षी होती है।

• प्रयोजन मूलक तर्क में ईश्वर को केवल साधन माना है इससे ईश्वर में विवशता आती है तथा ईश्वर सीमित हो जाता है।

• आकस्मिकता मूलक तर्क के अनुसार मानने पर ईश्वर का भी कोई आधार मानना पड़ेगा। तथा आकस्मिक वस्तुओं को अनिवार्य आधार मानने से गिलबर्ट राइल के अनुसार कोटिगत दोष पैदा हो जाता है।

• ईश्वर को अनिवार्य माना गया है। अनिवार्यता विश्लेषणात्मकता से आती है जबकि वास्तविकता संश्लेषणात्मकता से अतः अनिवार्यता व वास्तविकता साथ-साथ संभव नहीं है।

अतः काण्ट के अनुसार किसी भी तर्क द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने से विरोधाभास उत्पन्न होते हैं अतः ईश्वर आस्था का विषय है। इसे तर्क द्वारा सिद्ध या असिद्ध नहीं किया जा सकता।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. (c) Prove the god's notion by logic in pointless. Explain this according to Blik theory. 15

ईश्वर की सिद्धि को तर्कों के माध्यम से सिद्ध करना व्यर्थ है।' ब्लिक सिद्धांत के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

धार्मिक व्यक्ति द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए अनेक तर्क दिए जाते हैं। जैसे - सत्ता मूलक तर्क, विश्वमूलक तर्क, प्रयोजनमूलक तर्क, नैतिक तर्क। परंतु किसी भी तर्क के माध्यम से ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करना संभव नहीं है। इससे ईश्वर की अवधारणा में तार्किक विरोधाभास पैदा हो जाते हैं। ईश्वर की सिद्धी के तर्कों का खण्डन आर. एम. हेयर ने ब्लिक के माध्यम से किया है।

हेयर के अनुसार ईश्वर संबंधी विश्वास ब्लिक है। वे कोई संज्ञानात्मक सूचना प्रदान नहीं करते हैं। संवेगात्मक अर्थ में वे सूचना प्रदान करते हैं, संज्ञानात्मक अर्थ में नहीं। ब्लिक व्यक्ति के वे विश्वास होते हैं जो सत्य प्रमाणित नहीं होते। परंतु व्यक्ति उन पर विश्वास करते हुए अपना संपूर्ण जीवन जीता रहता है। जैसे कोई व्यक्ति मान ले कि सभी दिल्ली वासी उसे मारना चाहते हैं तो वह सभी दिल्ली वासी लोगों से इसी प्रकार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का व्यवहार करते हुए जीवन बिता देगा। इसी प्रकार धार्मिक व्यक्ति भी ईश्वर हमारा पिता है वह हमें सुरक्षा प्रदान करता है; ~~जैसे~~ वाक्यों को आधार बनाकर अपना संपूर्ण जीवन बिता देते हैं।

जबकि इन विश्वासों का कोई आधार नहीं होता तथा न ही इन्हें तर्कतः सिद्ध किया जा सकता है। संज्ञानात्मक रूप से ईश्वर के बारे में कुछ भी सिद्ध नहीं किया जा सकता।

परंतु मिशेल, हिक व कोम्बी जैसे विचारकों ने इसे स्वीकार नहीं किया। इनके अनुसार धार्मिक कथन संज्ञानात्मक होते हैं। ~~तथा~~ इसी प्रकार रम्बीनास व पॉलटिलिक ने इन्हें अर्द्धसंज्ञानात्मक माना है।

धार्मिक कथनों का संवेगात्मक महत्व होता है। भले इन्हें संज्ञानात्मक रूप से सही नहीं माना जाए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. (a) Compare and contrast the concept of liberation according to 'Advaita' and 'Visistadvaita. 15

'अद्वैत' व 'विशिष्टाद्वैत' के अनुसार मोक्ष की संकल्पना के बीच साम्य व वैषम्य दर्शाइए।

मोक्ष से तात्पर्य जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाने तथा ~~सुख~~-दुख पूर्ण स्थिति के अंत से है। अद्वैत व विशिष्टाद्वैत के मोक्ष में समानताएँ व विषमताएँ दोनों ही विद्यमान हैं।

समानताएँ :- दोनों ही दर्शन एक ही ब्रह्म सत्ता मानते हैं। ब्रह्म से ही जीव का अस्तित्व है। परंतु अज्ञान स्वरूप जीव अपने आप को ब्रह्म से पृथक मान लेता है तो वह बंधन में पड़ जाता है।

दोनों ही दर्शन ब्रह्म ज्ञान के महत्व को मोक्ष के लिए आवश्यक मानते हैं।

दोनों ही मोक्ष प्राप्ति के लिए कर्म मार्ग को कम महत्व प्रदान करते हैं।

विषमताएँ :- अद्वैत वेदान्त मोक्ष को प्राप्तस्य प्राप्ति मानता है, न कि नवीन वस्तु जबकि विशिष्टाद्वैत वाद के अनुसार मोक्ष नवीन वस्तु है।

• अद्वैत वेदान्त ब्रह्म में एकाकार को ही मोक्ष मानता है (अहम् ब्रह्मास्मि) जबकि विशिष्टाद्वैत वाद के अनुसार ब्रह्म व

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जीव मोक्ष के बाद भी पृथक बने रहते हैं। अतः वह सायुज्य मुक्ति को स्वीकार करता है न कि सारूप्य मुक्ति को।

• अद्वैतवेदान्त के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञान मार्ग सर्वप्रमुख है। जबकि विशिष्टाद्वैत भक्ति मार्ग को प्रमुखता देता है। इसके अनुसार प्रपत्ति मार्ग सर्वप्रमुख है।

• अद्वैत के अनुसार सदेह व विदेह मुक्ति दोनों संभव हैं। साधक को जीवित रहते हुए भी ब्रह्म का ज्ञान हो सकता है।

विशिष्टाद्वैतवाद केवल विदेह मुक्ति को स्वीकार करता है क्योंकि शरीर तो स्वयं बंधन का कारण है अतः इसके रहते मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती।

• अद्वैतवाद के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए साधक को गुरु की आवश्यकता पड़ती है जबकि विशिष्टाद्वैत के अनुसार ईश्वर भक्ति से ही मोक्ष मिल जाता है।

• अद्वैतवाद के अनुसार मोक्ष अपरोक्षानुभूति गम्य है। विशिष्टाद्वैत ब्रह्म व जीव भेद मानने के कारण इसे नहीं मानता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. (b) Write a critical note on the attributes of God. 20

ईश्वर के गुणों पर समीक्षात्मक टिप्पणी लिखिए।

ईश्वर की व्यक्तित्वपूर्ण अवधारणा में ईश्वर में अनेक तत्वमीमांसीय व नैतिक गुण माने गए हैं। तत्वमीमांसीय गुणों में सर्वशक्तिमान, नित्य, सर्वज्ञ, सर्वउपस्थित जैसे गुण प्रमुख है तथा नैतिक गुणों में न्याय, सद्गुणी, शुभ, दया करुणा आदि प्रमुख हैं।

सर्वशक्तिमान — ईश्वर सर्वशक्तिमान है तथा वह कुछ भी करने में सक्षम है। विश्व की सृष्टि करना, पालन करना व संहार उसी के कार्य हैं।

परंतु इसमें कई विरोधाभास हैं। क्या ईश्वर 2+2=5 कर सकता है?, क्या वह आत्महत्या कर सकता है? क्या ईश्वर इतना बड़ा पत्थर बना सकता है जिसे वह स्वयं भी न उठा पाए?
धार्मिक व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर देता है कि ईश्वर तार्किक व करने योग्य कार्य कर सकता है।

सर्वज्ञता — ईश्वर सर्वज्ञ है वह भूत भविष्य व वर्तमान सभी को जानता है। विश्व के किसी भी कोने में स्थित सभी वस्तुओं व घटनाओं की जानकारी उसे है।

परंतु सर्वज्ञता के साथ मानव संकल्प स्वातंत्र्य से सामञ्जस्य की समस्या आती है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

नित्यता - ईश्वर नित्य है। उसका सभी कालों में अस्तित्व है किसी भी काल में उसे अभाव युक्त नहीं माना जा सकता। शंकराचार्य के अनुसार वह त्रिकालाबाधित है।

परंतु आकस्मिक विश्व का अनिवार्य आधार होने के कारण ईश्वर को नित्य नहीं माना जा सकता।

सर्वव्यापकता - ईश्वर विश्व में व्याप्त है। वह कण-कण में निवास करता है। जड़-चेतन जीव-अजीव सभी विश्व में ईश्वर की अभिव्यक्तियाँ है। परंतु ऐसा मानने से ईश्वर में कई विरोधाभास पैदा होते है।

उपासक-उपास्य भेद समाप्त हो जाता है। नास्तिकों की उपस्थिति इसका खण्डन करती है। निकृष्ट वस्तुओं में भी ईश्वर को मानना पड़ेगा।

नैतिक गुण - ईश्वर में उच्च नैतिक गुण माने गए है। ईश्वर परम दयालु व न्यायप्रिय है। उसमें शुभ, सद्गुण जैसे मूल्य पूर्ण रूप में है।

परंतु नैतिक गुणों के कारण अशुभ की समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता। न्यायप्रिय होने पर दण्ड की

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यवस्था भी करनी होगी। इससे दयालुता का खण्डन होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ईश्वर को गुणों का अधिष्ठाता मानने पर कई तार्किक समस्याएँ आती हैं। गुणों में भी आपसी विरोधाभास है। जैसे सर्वज्ञता व नित्यता में। नित्यता व सर्वव्यापकता में। सर्वशक्तिमत्ता व दयालुता में। इसी प्रकार ईश्वर में गुणों को मानने पर जगत व ईश्वर के मध्य संबंधों की व्याख्या भी तार्किक दृष्टिकोण से नहीं की जासकती।

इसी कारण व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर की अवधारणा अस्तित्व में आई। परंतु यह धारणा तत्वमीमांसीय, नैतिक, ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण से कई प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ईश्वरीय गुणों में विरोधाभास होने के बावजूद भी धार्मिक व संवेगात्मक दृष्टिकोण से इसका महत्व है। व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर ही उपासक की प्रार्थना सुनकर उसकी समस्याओं को दूर कर उसे धार्मिक संतुष्टि प्रदान कर सकता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. (c) If God is regarded as 'one', will it give rise to religious conflicts? 15

क्या ईश्वर को एक माना जाए तो धार्मिक द्वन्द्व उत्पन्न होंगे?

ईश्वर की संख्या के आधार पर बहुदेववाद, अवसरवाद (हीनोथीज्म), द्विदेववाद, एकवाद जैसी अवधारणाएं आई। सामीधर्मों में एक ही ईश्वर की अवधारणा को माना गया है। इसमें निरपेक्ष सत तक पहुँचने का एक ही मार्ग बताया गया है। ईश्वर को एक ही मानने से कई धार्मिक द्वन्द्व उत्पन्न हो सकते हैं:-

• सभी व्यक्तियों के ज्ञानात्मक, भावनात्मक व क्रियात्मक पक्ष में भिन्नता होती है। अतः केवल एक ही ईश्वर इन सभी पक्षों की संतुष्टि नहीं कर सकता।

• मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना अर्थात सभी के विचार भिन्न हो सकते हैं। अतः एक ही सत की व्याख्या अनेक दृष्टिकोण से की जा सकती है।

• एक ही ईश्वर मानने से अशुभ की समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता क्योंकि इससे ईश्वरीय गुणों के विरोधाभास पैदा होता है।

अतः पारसी, यहूदी धर्मों के समान शैतान की धारणा स्वीकार की जा सकती है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जैसे अहुर-मज्दा अशुभ के लिए जिम्मेदार ईश्वर है। इससे ईश्वर पर दयालु नहीं होने के आरोप को हटाया जा सकता है।

• एक ही ईश्वर मानने से धर्म में जटिलता, कठोरता व रूढ़िवादिता आती है।

• धर्म के आधार पर समाज में तनाव उत्पन्न हो सकता है। अतः समाज का ढाँचा बहुलवादी होने के कारण एक से अधिक ईश्वर माने जाने चाहिए ताकि सभी व्यक्तियों की आवश्यकता व संतुष्टि के अनुसार ईश्वर को माना जा सके।

एक ही ईश्वर को मानने के कारण यद्यपि कई धार्मिक द्वन्द्व पैदा होते हैं (परंतु यही समस्या एक से अधिक ईश्वर मानने पर भी पैदा होती है। एकाधिक ईश्वर एक-दूसरे की शक्तियों को सीमित करते हैं। इससे ईश्वर की अवधारणा कमजोर होती है।

समाज में तनाव भी उत्पन्न होता है। सभी ईश्वरों की शक्तियाँ एक-दूसरे के विरोधाभासी भी हो सकती हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. (a) In Pluralistic society, religious pluralism has become a problem. The solution for this problem is not Sarvadharma Samanvaya but solution is sarvadharmasambhav. Discuss. 15

'बहुलवादी समाज में धार्मिक बहुलवाद एक समस्या बनती जा रही है। इस समस्या का समाधान सर्वधर्म समन्वय नहीं अपितु सर्वधर्म समभाव है।' चर्चा कीजिए।

धार्मिक बहुलतावाद के अनुसार 'निरपेक्ष सत्य' तक पहुँचने के अनेक मार्ग हैं। इस कारण सभी धर्म अपने-अपने अनुसार इसके विकल्प प्रदान करते हैं। परंतु इस कारण सभी धर्मों के मध्य तनाव संघर्ष उत्पन्न हो रहा है। क्योंकि सभी धर्म स्वयं को श्रेष्ठ मानते हैं। इस समस्या का समाधान 'सर्वधर्म समन्वय' व 'सर्वधर्म समभाव' के माध्यम से किया जा सकता है। सर्वधर्म समन्वय के तीन आधार हो सकते हैं:–

① एकाशिलात्मक सिद्धान्त के अनुसार केवल एक ही धर्म को विश्व धर्म मान लिया जाए तथा अन्य धर्मों को समाप्त कर दिया जाए। वही धर्म निरपेक्ष सत्य तक पहुँचने का सर्वोत्तम मार्ग प्रस्तुत करे।

परंतु इसमें यह समस्या है कि किस धर्म को विश्वधर्म माना जाए। कोई भी धर्म अन्य धर्म को मान्यता नहीं देगा।

② एक धर्म को आधार मान लिया जाए तथा अन्य धर्मों की अच्छी बातों का समन्वय इस धर्म में कर दिया जाए।

परंतु ~~कोई~~ सभी धर्मों के

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनुयायी अपने धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं अत: वे सभी अपने ही धर्म को आधारभूत धर्म बनाने पर जोर देंगे। अत: यह संभव नहीं है।

③ इस दृष्टिकोण के अनुसार सभी धर्म आंतरिक दृष्टिकोण से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं अत: उनकी मूल मान्यताएँ व लक्ष्य समान हैं अत: उनकी अच्छी मान्यताओं को जोड़कर दीन-ए-इलाही के समान एक नया धर्म बनाया जाए।

यहाँ समस्या है कि सभी धर्मों की मान्यताएं विपरीत व भिन्न हैं। पृथक दृष्टिकोण से सभी सही हैं। अत: यह संभव नहीं है।

इसलिए सर्वधर्म समभाव एक उचित समाधान है। इसमे सभी धर्मों का सम्मान करते हुए उन्हें समान माना जाए। सभी धर्मों की विशिष्टता का सम्मान करते हुए उन्हें बनाए रखा जाए। इससे समाज में सौहार्द की भावना विकसित होगी। धर्म परिवर्तन जैसी आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी क्योंकि सभी धर्म समान हैं। गाँधीजी इसका समर्थन करते थे। सर्वधर्म समन्वय में जो समस्याएँ आ रही थी उन्हें सर्वधर्मसमभाव से दूर किया जा सकता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. **(b)** "If God does not exist then why should one be moral all the time? Discuss. 20

यदि ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है, तो सभी व्यक्ति नैतिक ही क्यों हों? चर्चा कीजिए।

धर्म व नैतिकता के आपसी संबंध कोलेकर विभिन्न मत हैं। नैतिकता किसी भी कार्य के औचित्य व अनौचित्य का निर्धारण करती है। नैतिकता को धर्म पर आधारित मानने से इसका पालन संभव हो पाता है इसलिए कहा जाता है कि ईश्वर को मानने से नैतिकता को दृढ़ बनाया जा सकता है।

कांट के अनुसार नैतिक नियम निरपेक्ष होते हैं। उनके आधार पर सुख प्राप्त होना आवश्यक है जिसे कान्ट ने पूर्ण शुभ कहा है। परंतु पूर्ण शुभ प्रदान करने का कार्य ईश्वरही कर सकताहै। इस कारण ईश्वर "मनोवैज्ञानिक उत्प्रेरक" के समान कार्य करता है, ताकि नैतिक रहने पर पूर्ण शुभ तथा नहीं रहने पर दण्ड प्रदान किया जा सके। कान्ट नैतिकता के लिए तीन पूर्व शर्तें मानता है – संकल्प स्वातंत्र्य आत्मा की अमरता व ईश्वर का अस्तित्व। परंतु ईश्वर आस्था का विषयहै, न कि तर्क का।

सामान्यतया ईश्वर को सभी उच्च नैतिकगुणों से युक्त माना जाताहै। इस कारण सभी व्यक्ति उच्चतर स्तर को प्राप्त करने के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लिए नैतिकता का पालन करते हैं।

ईश्वर धर्म का एक केंद्रीय तत्व है धर्म नैतिकता को शुष्क व नीरस होने से बचाता है। कर्म नियम, मोक्ष, पुनर्जन्म आदि धार्मिक मान्यताएँ नैतिकता के पालन को प्रोत्साहित करती हैं।

धर्म नैतिकता का सैद्धान्तिक आधार है। यदि धर्म व ईश्वर न हो तो नैतिकता को सार्वभौमिक व वस्तुनिष्ठ नहीं बनाया जा सकता। सभी व्यक्ति नैतिकता की व्याख्या अपने अनुसार करने लग जाएँगे। इससे सही - गलत की व्याख्या उचित रूप से नहीं की जा सकेगी।

अतः ईश्वर नैतिकता के पालन में एक न्यायाधीश की भूमिका निभाता है।

परंतु दूसरे दृष्टिकोण से देखने पर यह विचार उचित नहीं है। ईश्वर धर्म का एक महत्वपूर्ण तत्व है परंतु केन्द्रीय तत्व नहीं है। ईश्वर विहीन धर्मों में नैतिकता को माना गया है, जैसे जैन, बौद्ध, कन्फ्यूशियस आदि। ईश्वर के बिना भी नैतिकता का पालन संभव है। यह केवल ईश्वरवादी धर्मों के दृष्टिकोण से ही संभव है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वर्तमान में मानववादी, प्रकृतिवादी धर्म नैतिकता के लिए ईश्वर को आवश्यक नहीं मानते।
आगस्त कॉम्ट के अनुसार प्रत्यक्षवाद के आधार पर नैतिकता को माना जा सकता है।
जॉन डिवी ईश्वर के बजाय प्रकृतिवाद को नैतिकता का आधार मानते हैं। धर्मनिरपेक्षता की भावना के कारण व्यक्ति नैतिकता का पालन करते हैं। इसी प्रकार एम-एन राय जैसे नवमानववादी उपयोगितावाद को नैतिकता का आधार मानते हैं।

वर्तमान में सभी व्यक्ति 'प्रबुद्ध स्वहित' के आधार पर नैतिकता का पालन करते हैं। क्योंकि नैतिक रहने में ही उनकी व समस्त समाज की भलाई है। ईश्वर जैसी ~~किसी~~ सत्ता की नैतिकता के लिए आवश्यकता नहीं है।

नैतिकता को धर्म पर आधारित मानने से कई अतार्किक मान्यताओं को भी नैतिक माना जा सकता है जैसे पशु बलि आदि।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. (c) Real meaning of Religion inherent is in logic not in emotion and action, discuss. 15

धर्म को वास्तविक अर्थ तार्किकता में निहित है न कि क्रिया व भावना के पक्ष में। चर्चा कीजिए।

धर्म अपने से परे की सत्ताओं में विश्वास है, जिसमें उपासना व सद्कर्म के माध्यम से व्यक्ति उन सत्ताओं से जुड़ा रहता है।

धर्म मनुष्य के जीवन से महत्ता से जुड़ा रहता है। इसमें व्यक्ति के ज्ञानात्मक, क्रियात्मक व भावनात्मक सभी पक्षों की संतुष्टि का प्रयास किया जाता है। धर्म के पाश्चात्य संदर्भ में इसे ईश्वर केन्द्रित धारणा माना गया है जबकि भारतीय संदर्भ में इसे स्वकर्तव्यपालन माना गया है। धर्म आस्था व विश्वास पर आधारित होता है। परंतु इससे धर्म में मानसिकता व अतार्किकता आ जाती है।

अतः धर्म के वास्तविक अर्थ में धर्म से तात्पर्य तार्किकता से है जिसमें सभी धार्मिक मान्यताओं व विश्वासों का दार्शनिक विश्लेषण किया जाता है। इससे धर्म के उद्देश्य

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को प्राप्त किया जा सकता है। ~~इससे धर्म~~ ~~के~~ तर्क द्वारा धार्मिक आस्था का मार्ग प्रशस्त करे उसे सुदृढ बनाया जा सकता है।

परंतु कान्ट इस मत कोसही नहीं मानते। उनके अनुसार आस्था को मानने के लिए मुझे तर्क को हटाना पड़ा। वस्तुत: धर्म आस्था का विषय है। इसे तर्क के साथ नहीं जोड़ा जा सकता।